शोध मंथन ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X Impact Factor 6.726 (SJIF)
Vol. X, No.IV, pp (1148-1154) Oct.- Dec. 2019

संगीत और मीडिया

डॉ० सुमन लता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग
आर०जी० (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

सारांश

संगीत आत्मा की मुख्य अभिव्यक्ति है। संगीत के द्वारा मन को शान्ति और आनन्द की प्राप्ति होती है। संगीत क्योंकि काल निरपेक्ष होता है इसलिये वह शाश्वत मूल्यों से परिपूर्ण है। यह हमारे जीवनमूल्यों की रक्षा करता है। हम अपने विचारो, जानकारी व भावनाओं का किसी के साथ आदान–प्रदान करना चाहते हैं और मीडिया इसका सरल माध्यम है। मीडिया जीवन को अर्थपूर्ण और जीवन्त बनाने के लिये अति आवश्यक है।

समस्त कलाओं में संगीत कला सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। संगीत कला का मूल आधार नाद है। नाद की अन्य कलाओं की भाँति किसी बाह्य आधार की आवश्यकता नहीं है। यह अपने आप में पूर्ण है। इसी कारण संगीत को सर्वश्रेष्ठ कला कहा गया है। संगीत की अभिव्यक्ति के माध्यम स्वर और लय हैं, जिनका कोई मूर्त आधार नहीं है। किसी भाषा तत्व की भी इसे आवश्यकता नहीं है। इसीलिये पशु–पक्षी चर–अचर व पृथ्वी के सभी मानवों– चाहें वे किसी भाषा को बोलते हों– पर इसका स्थायी प्रभाव पड़ता है। जहाँ वाणी मूक हो जाती है, रंग नष्ट हो जाता है, वहाँ, संगीत की स्वर लहरी बिना किसी माध्यम की सहायता के फूट पड़ती है। संगीत रस की निर्झरिणी है, जिसमें भी गकर थका हुआ पथिक अपनी थकान भूल आनन्दमय हो जाता है। संगीत उसे रसाप्लावित कर देता है।

चिरकाल से नहीं, अपितु अदिकाल से अनन्तकाल तक संगीत ही मानव का साथी है और रहेगा। जब भाषा नहीं थी तब भी संगीत था। जब भाषा का विकास हुआ तब भी संगीत था और जब भाषा अपने चरम पर पहुँच गई है तब भी संगीत वर्तमान है।

जनमानस सदैव ही अधिकारिक जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रहा है। मानव की इच्छा ने ही मीडिया के उद्भव एवं विकास को सहारा दिया है। मीडिया में जनता को भाषा में, जनता की बात को जनता के लिये लिखना या कहना और प्रकाशित करना पड़ता है।

पहले मुद्रित माध्यम (Print Media) जैसे– समाचार पत्र, पत्रिकाओं तथा इलेक्ट्रोनिक्स माध्यम (Electronic Media) जैसे– रेडियो, ट्रांजिस्टर आदि का प्रचलन था। परन्तु वर्तमान युग में भारत में ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व में इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया में टेलीविजन, सिनेमा, कम्प्यूटर तथा सेल्युलर फोन आदि अधिक लोकप्रिय और प्रभावी हैं।

1176 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

वास्तव में सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में मीडिया की मुख्य भूमिका है। मीडिया अर्थात संचार माध्यम–सूचना और विचारों का प्रसार करने वाला साधन। सूचना के अभाव में व्यक्ति अपने समाज, देश और संपूर्ण विश्व से कट जाता है। मीडिया ही व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है, देश से देश को जोड़ता है और परस्पर विचार विमर्श के लिये आधार भूमि देता है। संचार का यह माध्यम कुछ भी हो सकता है चाहे यह पत्र–पत्रिका हो रेडियो–टी0वी0 अथवा इन्टरनेट।

हम अपने विचारों, जानकारी व भावनाओं का किसी के साथ आदान–प्रदान करते हैं। संचार माध्यम जीवन को अर्थपूर्ण और जीवन्त बनाने के लिये अति आवश्यक है। इसमें टी0वी0 की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सांस्कृतिक तथा कलात्मक रचनाओं के प्रचार–प्रसार द्वारा अतीत की परम्परा को सुरक्षित रखना संस्कृति के विकास के लिये व्यक्तिगत ज्ञान की सीमा को विस्तृत करना, व्यक्ति की रचनात्मक कल्पनाशक्ति जाग्रत करना तथा रुचि अनुरूप आवश्यकताओं व रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने में संचार माध्यमों का अभूतपूर्व योगदान रहता है।

संगीत मानव–मस्तिष्क की कलात्मक उपलब्धि है। यह मानवीय भावनाओं को मूर्त रूप देने में सशक्त माध्यम है। संगीत के आधारतत्व स्वर व लय हैं। मानव का जीवन अर्थात् उसकी श्वाँस–प्रक्रिया नियमित लय के रूप में संगीत से जुड़ी है। संगीत मानव जीवन का अभिन्न पहलू है।

''संगीत'' – एक ऐसी अलौकिक व आध्यात्मिक शक्ति है जिसके प्रभाव से प्राणी मन आनन्द रस के सागर में गोते लगाए, स्वच्छ, स्वछन्द आकाश की सैर संगीत रूपी पंख लगाकर करता रहे, न केवल आकाश अपितु देवलोक की सैर का आनन्द उठा सके तथा आत्मा सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर परम परमात्मा में लीन हो जाये।

समाज में किसी भी कला या कलाकार को ऊँचा उठाने में पत्रकारिता का विशेष स्थान रहा है। पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। पत्रिका सही अर्थ में विशिष्ट ज्ञान को सामान्यजन तक पहुँचाने की क्रिया में अग्रसर होती है क्योंकि वह किसी ग्रन्थ की तुलना में अधिक लोगों के हाथ में पहुँचती है।

19वीं शताब्दी के अंत में भारत में प्रथम संगीत पत्रिका प्रकाशित हुई थी ''ओरिएण्टेड म्यूजिक इन स्टाफ नोटेशन जिसके सम्पादक चिन्नास्वामी मदलियार थे। यहाँ से शुरु हुई संगीत पत्रिकाओं की परम्परा इसके बाद यायनाब्धिसेतु संगीत मीमांसा तथा संगीतामृतप्रवाह नामक पत्रिकायें प्रकाशित हुई, जिनका प्रकाशन बाद में बन्द हो गया। आजकल प्रकाशित पत्रिकाओं में संगीत, संगीत कला विहार तथा छायानट हैं, जिनका न केवल संगीत के प्रचार–प्रसार मे वरन् विलुप्त होती विद्याओं के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान है।

टेलीविजन जन संचार का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है। वर्तमान युग में टेलीविजन ने सभी आयु–वर्ग के कलाकारों को अधिक से अधिक मंच प्रदान कर संगीत कला के विकास में सराहनीय योगदान दिया है। संगीत की तीन विद्यायें हैं– गायन, वादन व नृत्य। टेलीविजन

के विभिन्न चैनलों पर गायन–वादन व नृत्य के अनेकानेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं जिससे लोगों का संगीत के प्रति बढ़ता रुझान तथा उनका संगीत के प्रति समर्पण–भाव का अनुभव होता है। इससे हमारे छोटे–बच्चों में छिपी सांगीतिक प्रतिभा सामने आई है।

संगीत के प्रति रुचि व ज्ञान की कमी तो पहले भी नहीं थी बस कमी थी तो इतनी कि मीडिया द्वारा उसे प्रोत्साहन नहीं किया गया। आज बच्चों की अद्‌भुत प्रस्तुति को देखकर हम कह सकते हैं कि मीडिया ने बाल कलाकारों में कितना आत्मविश्वास बढ़ाया है। यही आत्मविश्वास उनके भावी जीवन की तथा साथ ही सुंदर, कीर्तिमान भारत की जीत है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गर्ग, डा० लक्ष्मी नारायण. (1977). संगीत निबन्धावली।
2. परंजपे, डा० शरच्चन्द्र श्रीधर. (1972). संगीत बोध।
3. राय, डा० सुरेश व्रत. संगीत के जीवन. पृष्ठ **1000.**
4. शास्त्री, डा० के० वासुदेव. (1968). संगीत शास्त्र।
5. (1993). संगीत पत्रिका. जुलाई।